उपन्यासकार तेजिंदर सिंह 'गगन' पत्रकार भी थे!

प्रो. अज़हर हाशमी
लेखक, कवि और समालोचक हैं

मेरे मत में साहित्यकार तेजिंदर सिंह 'गगन' क़लम के कमाल की त्रिवेणी थे. वे जब पत्रकारिता के क्षेत्र में थे तो उनकी रिपोर्टिंग कमाल की होती थी. जब केंद्र शासन की सेवा (आकाशवाणी और दूरदर्शन विभाग) में 19 अप्रैल 1977 को आकाशवाणी रायपुर (तब मध्यप्रदेश अब छत्तीसगढ़) में सहायक संपादक (आलेख) के पद पर नियुक्त हुए तो उनका संपादन/आलेखन कमाल का होता था. जब उपन्यास-लेखन में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने अनछुए विषयों पर क़लम को केंद्रित करके कमाल दिखाया. वे विनयशील इंसान थे और संस्कारशील क़लमकार. पत्रकारिता के दौर में दंभी नहीं हुए. आकाश 'वाणी' बोलते रहे परंतु 'पांव' धरती पर ही जमाये रखे. दूरदर्शन केंद्र रमायपुर के उप महानिदेशक (कार्यक्रम) रहे किंतु निरभिमानता के साथ. लोकप्रिय कार्यक्रमों के निर्माण से उन्होंने रायपुर दूरदर्शन की विशिष्ट पहचान बना दी थी. छत्तीसगढ़ सरकार ने उन्हें सन् 2014 में उनके साहित्यिक अवदान के लिए 'पं. सुंदरलाल शर्मा सम्मान' से सम्मानित किया था.

हिंदी भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार तेजिंदर सिंह 'गगन' (निधन: बुधवार, 11 जुलाई 2018) प्रखर पत्रकार भी थे. एक ओर, वे धरातल की पत्रकारिता के धुरंधर थे, दूसरी ओर, समस्या-केंद्रित उपन्यास लेखन के समन्दर थे. तमिलनाडु में लिट्टे की समस्या पर केंद्रित उनका उपन्यास 'सीढ़ियों पर चीता' बहुत चर्चित हुआ था.

मेरे मत में साहित्यकार तेजिंदर सिंह 'गगन' क़लम के कमाल की त्रिवेणी थे. वे जब पत्रकारिता के क्षेत्र में थे तो उनकी रिपोर्टिंग कमाल की होती थी. जब केंद्र शासन की सेवा (आकाशवाणी और दूरदर्शन विभाग) में 19 अप्रैल 1977 को आकाशवाणी रायपुर (तब मध्यप्रदेश अब छत्तीसगढ़) में सहायक संपादक (आलेख) के पद पर

प्रसंगवश: साहित्य-पत्रकारिता

नियुक्त हुए तो उनका संपादन/आलेखन कमाल का होता था. जब उपन्यास-लेखन में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने अनछुए विषयों पर क़लम को केंद्रित करके कमाल दिखाया. वे विनयशील इंसान थे और संस्कारशील क़लमकार. पत्रकारिता के दौर में दंभी नहीं हुए. आकाश 'वाणी' बोलते रहे परंतु 'पांव' धरती पर ही जमाये रखे. दूरदर्शन केंद्र रमायपुर के उप महानिदेशक (कार्यक्रम) रहे किंतु निरभिमानता के साथ. लोकप्रिय कार्यक्रमों के निर्माण से उन्होंने रायपुर दूरदर्शन की विशिष्ट पहचान बना दी थी. छत्तीसगढ़ सरकार ने उन्हें सन् 2014 में उनके साहित्यिक अवदान के लिए 'पं. सुंदरलाल शर्मा सम्मान' से सम्मानित किया था.

साहित्यकार तेजिंदर सिंह 'गगन' की लेखनी कथाओं में रमती थी, इसलिये उपन्यास लेखन की ज़मीन ही उन्हें जमती थी. मेरे मत में उनके उपन्यास 'इमेजिनेटिव वर्क' नहीं, बल्कि रिसर्च वर्क है. अंबिकापुर में आदिवासी ईसाइयों की पृष्ठभूमि पर लिखा उपन्यास 'काला पादरी' इसका प्रमाण है. उनके उपन्यासों की भाषा, पाठक को भूल-भुलैया में नहीं घुमाती अपितु सपाट बयानी से साक्षात्कार कराती है. तेजिंदर सिंह 'गगन'की कृति (यह मेरा चेहरा) पढ़ते हुए पाठक जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता है उसे उस भाषा से लगाव होता जाता है. 'हेलो! सुजीत' तेजिंदर सिंह का वह उपन्यास है जो कल भी बहुत चर्चित था और आज भी संगोष्ठियों में समीक्षा/समालोचना का विषय बना रहता है. उल्लेखनीय है कि तेजिंदर सिंह 'गगन' की 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. मैं, उनमें से केवल 4 (सीढ़ी पर चीता/काला पादरी/यह मेरा चेहरा/हेलो! सुजीत) ही पढ़ सका हूं. शेष अन्य कृतियां मेरे पास हैं भी नहीं, इसलिये नहीं पढ़ पाया मेरी पढ़ी हुई उपर्युक्त चारों पुस्तकें भी मेरे एक मित्र पढ़ने हेतु ले गए थे, जिन्होंने अभी तक उन्हें लौटाया नहीं है. उनके द्वारा पुस्तकें नहीं लौटाने पर मुझे किसी का वह कथन याद आ रहा है- 'वे मूर्ख हैं जो अपनी पुस्तकें दूसरों को देते हैं, परंतु उनसे भी अधिक मूर्ख वे हैं जो उन्हें लौटाते हैं.' अस्तु!

अब, मैं आता हूं साहित्यकार तेजिंदर सिंह 'गगन' से जुड़े मेरे संस्मरणों पर. उनसे मेरी सबसे पहली भेंट अक्टूबर 1983 में रायपुर (जैसा कि बताया जा चुका है कि तब मध्यप्रदेश में था और अब छत्तीसगढ़ में है) कवि सम्मेलन में हुई थी. राठौर चौक, रायपुर में आयोजित उक्त कवि सम्मेलन का संचालन मैंने ही किया था. अक्टूबर 1983 में रायपुर के उस कवि सम्मेलन में गोविंद व्यास, गोपालदास नीरज, शैल चतुर्वेदी, कवयित्री अंजुम रहबर और दुर्ग-भिलाई के कुछ कवियों ने भी शिरकत की थी. मुझे जहां तक याद है दुर्ग-भिलाईसे कवयित्री श्रीमती संतोष झांझी और व्यंग्यकार रवि श्रीवास्तव ने कवि-सम्मेलन में साझेदारी की थी. मुझे खास तौर से कवि सम्मेलन के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था. उल्लेखनीय है कि सत्तर और अस्सी के दशक में यानी लगभग 20 वर्षों तक मैंने कवि सम्मेलनों का संचालन मध्यप्रदेश से लेकर राजस्थान तक और महाराष्ट्र से लेकर उत्तरप्रदेश (विशेषकर चंदौसी/रामपुर/झांसी/लखनऊ) तक किए हैं. 1970 से 1990 तक का हिंदी कवि सम्मेलनों का दौर साहित्यिक संचालन का दौर था जिसमें शब्द के सम्मान और काव्य की गरिमा पर ज़ोर था. उसके बाद तो संचालन से साहित्यिकता जाने लगी और चुटकुलेबाज़ी छाने लगी. साहित्यिक कवि तिरस्कृत होने लगे और चुटकुलेबाज़ पुरस्कृत होने लगे. खैर! मैं पुन: उसी वाक्य पर आता हूं कि साहित्यकार तेजिंदर सिंह 'गगन' से मेरी पहली भेंट सन् 1983 के रायपुर कवि सम्मेलन में हुई. उस समय वे आकाशवाणी, रायपुर में सहायक संपादक (आलेख)के साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग भी अपनी टीम के साथ प्रोग्राम-पाइंट पर जाकर करते थे. रायपुर का वह कवि सम्मेलन सुनने के लिए मेरे परम मित्र डॉ. प्रकाश चंद्र कामरा भी आए थे. जो तब वहां (रायपुर में) कॉलेज में प्रिंसिपल थे. डॉ. कामरा ने मेरे छोटे भाई मज़हर हाशमी को शास. वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम में तब एडमिशन दिया था जब वे 1981-82 में यहां (रतलाम में) प्रिंसिपल थे.

डॉ. कामरा ने (जैसा कि उन्होंने मुझे बाद में बताया था) जीवन में पहली बार रात भर जागकर कोई कवि सम्मेलन सुना था. मेरे संचालन और कवि सम्मेलन की रिकॉर्डिंग तेजिंदर सिंह 'गगन' ने आकाशवाणी रायपुलर हेतु की थी. संचालन से प्रभावित होकर 'गगन' ने कहा था- 'हाशमी जी! आप जैसे संचालक रहेंगे तो कवि सम्मेलन बचा रहेगा.' उनका यह कमेंट मेरा संस्मरण हो गया. उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि.

कविता

हिफाज़त

प्रो. डॉ. उषा गौर

उम्र धीरे धीरे ढल रही है
धुंध जिंदगी की
अब सिमट रही है

मेरे हाथों में तेरे हाथों की गरमी का एहसास
तेरी आँखों में
मेरी आँखों के जज्बात

आज फिर याद आया मुझको
मेरे सीने मे तेरा धड़कना
आज फिर आँखों से बहा
मेरी हसीन यादों का झरना

तेरी साफ सुथरी रूह को जब जब मैंने छुआ
मुझको अपने होने का एहसास फिर हुआ

तू कब समा गया
इस तरह मेरे अंदर
कभी कोई कर ना सका
जुदा फिर जीवन भर

जीवन के रास्तों में
हजारों मुश्किलें आईं
तेरी मौजूदगी को देख
वो भी तो घबराईं

चुपचाप ही करता रहा
तू मेरी निगरानी
मेरी हिफाजत करने की
वजह मैंने जानी

जो वादे किये थे मुझसे
उन्हें कैसे भुलाता
हिफाजत करने में मेरी
तू दिन रात लगाता

सबकी हिफाजत के लिये एक युक्ति लगाई
मां पिता भाई बहन
बेटा बेटी बनाए
इस तरह एक दूजे की
हिफाज़त करवाई

पुस्तक समीक्षा

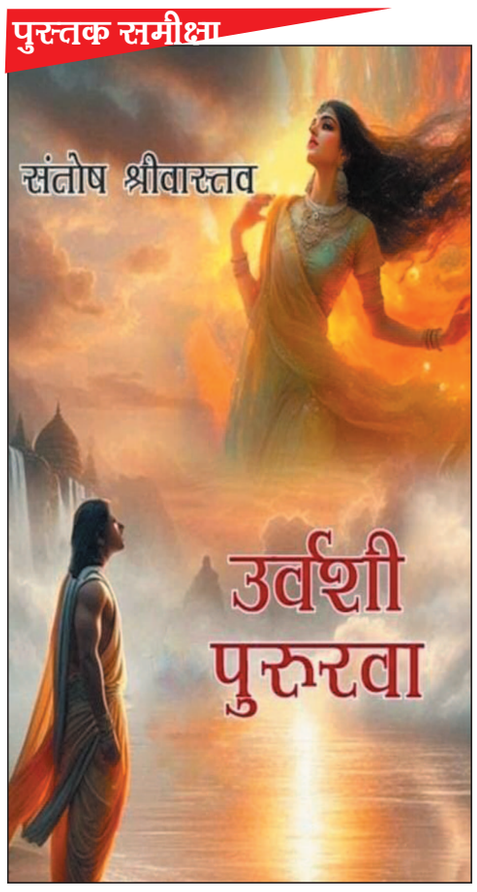

सनातन प्रेमानुरागी चरित्रों की साहित्यिक निष्पत्ति- 'उर्वशी पुरुरवा'

डॉ. नीलिमा रंजन

सद्य: प्रकाशित उपन्यास 'उर्वशी पुरुरवा' भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम अंश है. निश्चित ही इस प्राचीनतम प्रेमकथा के सूत्रों को पौराणिक, ऐतिहासिक प्रसंगों से चयन कर एक स्वरूप देना दुरूह रहा होगा क्योंकि इन्द्रदेव की राजसभा की उर्वशी और भूलोक में प्रतिष्ठानपुर के चंद्रवंशी राजा पुरुरवा की प्रेमकथा का जब से इतिहास लेख किया गया तभी से बहु-उल्लेखित होने के कारण कथा की विषय-वस्तु परिचित लगती है किंतु जहाँ परिचय अधिक हो उस विषय पर कहना और लिखना रचना कठिन होता है. साधुवाद है संतोष श्रीवास्तव ने साहस कर इतनी परिचित और कितनी ही बार दोहराई जा रही कथा को नवीन कलेवर देने के लिये ना केवल चयन किया बल्कि उसकी अक्षुण्णता के साथ भी न्याय किया.

एक तथ्य और भी है कि किसी विषय विशेष पर कितना भी लिखा-बोला जाए, कुछ न कुछ अछूता रह ही जाता है तो ऐसे बिंदुओं को लेकर पड़ताल कर, शोध कर प्रस्तुत किया होगा. उल्लेखनीय है कि कथानक और पात्रों के चरित्रों का साम्य बैठाना अत्यधिक जटिल रहा होगा. एक सुपरिचित विषय पर 151 पृष्ठों का उपन्यास रचना एक अलग अनुभव रहा होगा.

हिन्दी साहित्य में संतोष श्रीवास्तव का विविधतापूर्ण रचना संसार सतत नूतन रूपों में सामने आता है. तीस से अधिक पुस्तकों के लिए पाँच अंतर्राष्ट्रीय और 20 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी संतोष श्रीवास्तव का साहित्य समाज के प्रति दायित्वों का वहन करता है, यह सामाजिक सरोकार सायास नहीं है, अनायास ही उनकी कृतियों में गुँथा रहता है.

उर्वशी तथा पुरुरवा का काल 1600 ईसा पूर्व कहा जाता है . इसका उल्लेख ऋग्वेद में, 18 ऋचाओं में है और 18 पुराणों में किसी न किसी रूप से वर्णित है. वेदों में ये दोनों सनातन नर व सनातन नारी का रूप माने गए हैं उर्वशी एक आकाशीय दिव्य अप्सरा है जिसका उल्लेख रामायण व महाभारत में भी है, वहीं पुरुरवा रूप, रस, गंध, स्पर्श से मिलने वाले सुखों से उद्वेलित एक अभिनव मनुष्य .ब्राह्मण ग्रंथ में भी यह प्रणय गाथा है.कालिदास के नाटक 'विक्रमोर्वशीय' व रामधारी सिंह दिनकर की 'उर्वशी' में भी इसकी चर्चा है. 'सूर सागर' में भी यह प्रसंग आया है. इन संदर्भों का उल्लेख लेखिका ने आत्मकथ्य में ही कर दिया है उसी के आधार पर मैंने कथानक का विश्लेषण करने की चेष्टा भी की है.

वैदिक संस्कृति की इस प्रथम कथा को नाट्य रूप देते हुए कालिदास ने उर्वशी और पुरुरवा के प्रथम साक्षात्कार का वर्णन विस्तार से किया है. उपन्यास में यह एक इंद्रजाल सा, माया सा लगता है. कहन शैली शब्दों के माध्यम से चलचित्र दिखा देती है. जैसे अतीत से बहुमूल्य सीप-मोती खोज लिए हों. कथा वही है किंतु अतुलनीय प्रेम भावना से यूँ आच्छादित है कि प्रत्येक शब्द रेखाचित्र, प्रेम मद में सराबोर लगता है. 'विक्रमोर्वशीय' में मिलन- विरह का वर्णन तो है ही, साथ ही महारानी औशीन को उर्वशी द्वारा पुरुरवा को प्रेषित पत्र महाराज से पूर्व ही मिलने का लेख है. औशीनरी द्वारा तत्काल पुरुरवा को सौंपने का संदर्भ है, साथ ही लता का उर्वशी रूप लेने का भी संदर्भ है. लेखिका ने इन प्रसंगों को एक पृथक रूप से चित्रित किया है.

उर्वशी पुरुरवा (उपन्यास)
संतोष श्रीवास्तव
प्रकाशक- किताब वाले पब्लिकेशन नई दिल्ली
मूल्य-600 रुपये

कविता

तुम चले आते हो

निकिता जैन

बोझिल आंखें
जब नींद की
राह तकती हैं
मीठी सी
थपकी
बनकर
रंग बिरंगे
आकार और
धुंधली सी
आकृति बनकर
उनींदी आंखों में
सपना बन जाते हो.

तुम चले आते हो
रसोई में गर्मी और धुंए से
लाल हो उठती है आंखें
ठंडी हवा का झोंका बनकर
कानों में दो शब्द प्यार के
कह जाते हो.

तुम चले आते हो
बगीचे में लगी
कांटे की खरोंच पर
लाल छलछलाती बूंद पर
फूलों की खुशबू बन
मलहम लगा जाते हो.

तुम चले आते हो
मेरे विचारों में
एक छोर अपने हाथ में
रख
दूसरा मुझे थमा जाते हो
बूंदों के साथ मिलकर
इंद्रधनुष बन जाते हो.

तुम चले आते हो
मेरी दुनिया में
तुम्हें कौन रोक सकता है,
आने से
कलम की नोक पर सवार होकर
कविता बन जाते
हो.

लघुकथा

शंख की आवाज़

पवन शर्मा

रमेश जी की उम्र अब साठ के पार जा चुकी थी. कभी शहर के कॉलेज में दर्शनशास्त्र पढ़ाया करते थे. एक वक्त था जब उनके क्लासरूम में युवा आँखें उनसे जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने आती थीं—आत्मा क्या है, मोक्ष क्या है, सत्य क्या है. पर अब... अब जीवन खुद ही एक शांति का पाठ पढ़ा रहा था.

पिछले साल पत्नी चली गई. बेटे-बहू शहर में व्यस्त हो गए. अकेलापन था, पर कोई शिकायत नहीं.

उन्होंने गाँव के अपने पुराने घर में लौटना तय किया. मिट्टी की सोंधी खुशबू, तुलसी का चौरा, मंदिर की आरती और पीपल की छाँव—यही सब उनका संसार बन गया.

एक सुबह, जब धूप खिड़की पर दस्तक दे रही थी, रमेश जी ने स्नान किया, धोती पहनी और अपनी पुरानी रुद्राक्ष की माला गले में डाली. माँ की तस्वीर के सामने हाथ जोड़ते हुए एक शांत मुस्कान उनके चेहरे पर फैल गई. जैसे कोई अंदर से बोल रहा हो—तू अपने रास्ते पर है रमेश.

अचानक पीछे से नन्हा नीलेश दौड़ता हुआ आया. स्कूल की छुट्टियों में पहली बार गाँव आया था. भोला-सा चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें.

दादाजी, आप हर रोज़ ये माला क्यों पहनते हो? उसने पूछा.

रमेश जी ने उसे गोद में बैठा लिया, उसके बालों में हाथ फेरते हुए बोले, ये माला मुझे मेरी साँसों की याद दिलाती है. हर मनका कहता है—तू जीव है, शरीर नहीं.

मतलब आप... भगवान बन गए हो? नीलेश ने आँखें फैलाकर पूछा.

नहीं बेटा, रमेश जी हँसे, भगवान तो बहुत दूर की बात है. पर हाँ, मैं अब खुद से बात करने लगा हूँ. और जब इंसान खुद से बातें करना सीख जाए, तो बाहर की बातें छोटी लगने लगती हैं.

नीलेश कुछ पल चुप रहा, फिर बोला, पापा तो कहते हैं आप अकेले रहते हो. पर आप तो बहुत मज़ेदार हो!

रमेश जी की आँखें नम हो गईं. उन्होंने नीलेश को सीने से लगा लिया. बाहर मंदिर में शंख बजा. हवा में तुलसी की गंध घुल गई. उन्हें लगा, ये शंख सिर्फ मंदिर का नहीं है. ये उनके भीतर से आ रही आवाज़ है—कह रही है, तू अकेला नहीं है रमेश, तू अपने पास है... और जब तक तू अपने पास है, तू संपूर्ण है.

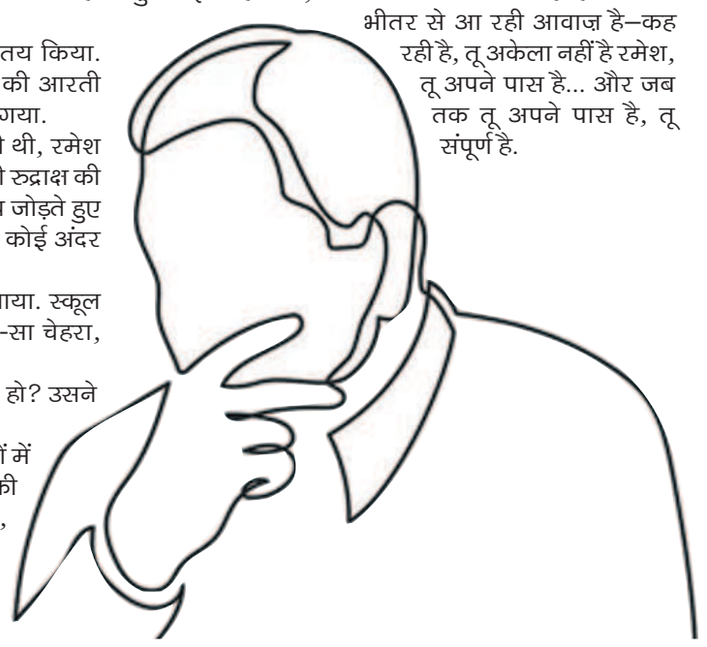

नज़्म

जन्नत का ख्वाब

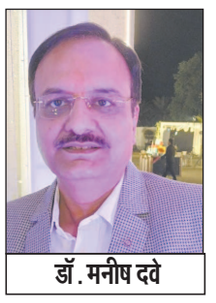

डॉ. मनीष दवे

वक्त जो गुजरता है तो यादें बदल जाती है
मंजिल बदलती है तो राहें बदल जाती है.

उम्र के जादू का असर कुछ ऐसा पड़ता है
इश्क की इबादत का आनंद खुद आता है.

मोहब्बत की वो बातें, यादें साथ निभाती हैं
आपकी पहली मुलाकात जिंदगी बनाती है.

आपके फंसाने का अंदाज बड़ा दिलकश है
देखके फिर आपको ख्यालों में बसा रखा है.

जमाने के सामने सच स्वीकारने से डरता हूं
लोग बदनामियां फैलाने से नहीं कतराते हैं.

दिल से सच्चा प्यार किया है तो परवाह नहीं
तेरी दिलकश अदाओं ने मन मोहित किया है.

फैसला किया तुझसे निबाह कर दोस्ती का
साथ महसूस हो जन्नत का ख्वाब आया है.

मैं दुनिया का सबसे खुशगवार इंसान बना हूं
खैरियत है कि यह जिंदगी की कामयाबी है.

फ़लसफ़ा ऐसा हुआ कि सुरुर ही बन गया है
ए मेरे हमसफ़र ये संयोग किसी को मिला है?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी